B·T·E ~~म~~ B.Ed 1st

Day :

Date : C-05 12·7·2021

ATUL

16. पाठ्यक्रम एक साधन के रूप में — पाठ्यक्रम की निर्माण करते समय स्थानीय स्त्रोतों का अधिक प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम जब विद्यार्थी कक्षा या विद्यालय में ग्रहण करते हैं। तो उसे अपने स्थानीय स्त्रोतों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। वे उन स्त्रोतों को अच्छी तरह से प्रयोग करना उचित है। पाठ्यक्रम की आवश्यकता छात्रों को उनके जीवन में विकसित करने के लिए भी होती है। छात्र जब विद्यालय में जाते हैं तो वे अपने सामाजिक व आर्थिक जीवन के लिए तैयार करते हैं। पाठ्यक्रम निर्धारित करके विद्यालय छात्रों की सहायता प्रदान करता है। वे अपना पूर्ण विकास करके समाज में अच्छे नागरिक बनते हैं। समाज की आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षाशास्त्री व दर्शनशास्त्री पाठ्यक्रम का निर्माण करते है। इस पाठ्यक्रम को छात्रों की रुचियों के आधार पर भी निर्मित किया जाता है। समय के साथ-2 पाठ्यक्रम में परिवर्तन अनिवार्य होते है। ये परिवर्तन समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम एक विद्यालय में वह साधन है। जिसको हर छात्र को अपने उद्देश्यों की पूर्ति व विकास के लिए अपनाना ही पड़ता है।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

17. पाठ्यक्रम व विद्यालय का वातावरण → विद्यालय में पाठ्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिए उचित वातावरण का होना आवश्यक है। यदि पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों के विकास व हितों के आधार पर होता है। तो उस पाठ्यक्रम को चलाने के लिए विद्यालय ऐसे वातावरण का निर्माण करता है।

18. पाठ्यक्रम में क्रियाओं का महत्व → पाठ्यक्रम में क्रियाओं को शामिल करके छात्रों को निपुण व हर कार्य करने में सक्षम बनाया जाता है। एक विद्यालय में छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न क्रियाएँ होती हैं। जो छात्रों के विकास में सहायता हैं। पाठ्यक्रम केवल कक्षा कक्ष तक ही सम्बन्धित नहीं होता है। बल्कि इसमें सहगामी क्रियाओं पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, कमशालाएँ, खेल का मैदान, विद्यालय की सीमा में घटित क्रियाएँ भी शामिल होती हैं। इससे बच्चों में करके सीखने की शक्ति का विकास होता है। इसमें छात्रों, अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों के अनुभव भी शामिल होते हैं। जिनको पाठ्यक्रम को लागू करने में प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बिना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की कल्पना भी नहीं कर सकता है न ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

B.Ed 1st
C-05 13.07.2021

Day :
Date :

ATUL

पाठ्यक्रम की आवश्यकता

शिक्षा की आवश्यकता और पाठ्यक्रम की आवश्यकता समान हैं। परन्तु शिक्षा की ऐतिहासिक समीक्षा से वे विदित होता है कि ये आवश्यकताएँ बदलती रहती हैं। इसलिए इन सभी आवश्यकताओं का उल्लेख यहाँ पर किया गया है।

1) ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानवीय दृष्टि के सर्वोपरि माना जाता है।

2) तकनीकी विकास के लिए तैयार करना

3) पाठ्यक्रम को ऐसा बनाया जाए जो अधिक से अधिक उपयोगी तथा आवश्यक हो क्योंकि पाठ्यक्रम के द्वारा ही छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है।

4) पाठ्यक्रम के द्वारा आत्मानुभूति का विकास किया जाए।

5) ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जिसके द्वारा सामाजिक आवश्यकता के लिए नागरिकों को तैयार किया जा सके।

6) छात्रों को व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण देकर तैयार करना।

7) प्रजातंत्र में सामाजिक क्षमताओं का विकास करना तथा ऐसे नागरिकों को तैयार करना जो प्रजातंत्र को नेतृत्व प्रदान कर सके।

8) मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण तथा विकास करने के लिए विभिन्न विषयों के शिक्षण से मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण किया जाता है।

marketing@atulauto.co.in www.atulauto.co.in

B.I.E B.Ed-1st
C-05 18.07.20

Day :
Date :

ATUL

शिक्षक के लिए अनुशासन का महत्व

प्रारम्भ शिक्षार्थी होता शिक्षा अवस्था का द्वितीय अनुशासनिक ज्ञान का अधिक ही पक्ष पर अनुशासनिक ज्ञान के माध्यम प्रभाव पड़ता है। अनुशासनिक ज्ञान को सरल एवं स्वाभाविक से एक शिक्षार्थी को प्राप्त होता है। यह रूप से अधिगम प्राप्त होता है। यह अधिगम पूर्णतः स्थायी रूप से होता है। क्योंकि इसमें शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रत्येक जिज्ञासा को शांत किया जाता है। अतः शिक्षार्थी के लिए अनुशासनिक ज्ञान के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

1) विषयों के चुनाव में उपयोगिता
2. विषयों के अधिगम में सरलता
3) उपयोगी ज्ञान का अर्जन
4) स्थायी अधिगम
5) समाकित अधिगम
6) सरल एवं स्वाभाविक अधिगम
7) प्रभावी अधिगम
8) अधिगम का स्थानान्तरण
9) सामाजिक समस्याओं का समाधान
10) सर्वांगीण विकास का उद्देश्य
11) व्यापक अधिगम
12) समग्र अधिगम

अनुशासनिक ज्ञान का प्रमुख उद्देश्य छात्रों के समक्ष ऐसी अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करना है। जिनसे उनका अधिगम स्तर उच्च हो तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

B.I.E B.Ed 1st
C-65 15.07.20

ATUL

समाजीकरण

समाजीकरण बच्चा जिस समाज में पैदा होता है और जिसके बीच रहकर बड़ा होता है, वह उसी समाज की भाषा आचरण की विधियाँ और रीति-रिवाज सीखता है, और तदनुकूल आचरण कर अपने समाज में समायोजन करता है। वह यह सब अपने परिवार पास पड़ोस, समवयस्क समूह, जाति और सम्प्रदाय के बीच रहकर सीखता है। विद्यालय में उसके इस प्रकार सीखे हुए व्यवहार का परिमार्जन किया जाता है। इन्हीं सबको समाजीकरण के अभिकरण कहा जाता है। यहाँ बच्चे का समाजीकरण करने वाले मुख्य अभिकरणों का वर्णन प्रस्तुत है।

परिवार → परिवार बच्चे का समाजीकरण करने वाली सबसे पहली और सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था है। बच्चा अपनी आँख सर्वप्रथम अपनी माँ की गोद में खोलता है। इसके बाद वह अपने परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आता है। वह अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर उनकी भाषा और आचरण की विधियाँ सीखता है। जिन कार्यों को करने की परिवार में स्वीकृति प्राप्त होती है, उन्हें वह दोहराता है और जिन कार्यों के लिए अस्वीकृति होती है।

17.07.2021

(iii) जाति → जाति भी समाजीकरण का मुख्य अभिकरण है। प्रत्येक जाति की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। परिवार के सदस्य स्वयं अपनी जाति की सीमाओं में बंधे होते हैं। वे अपनी जाति के कार्यक्रमों में भाग लेता है। बालक अपनी जाति के व्यवहार प्रतिमान और रीति-रिवाजों से परिचित होता है और उन्हें स्वीकार कर जाति में समायोजन करता है।